Review of ReseaRch
ISSN: 2249-894X
Impact Factor : 5.7631(UIF)
Volume - 12 | Issue - 7 | April - 2023

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान

डॉ. राजासलीम इमामसाब बिडी

प्रस्तावना:

स्वतंत्रता संग्राम में भरतीय कवियों द्वारा राष्ट्र के विभिन्न वर्गो, प्रांतों और संप्रदायों में भावात्मक एकता के विचार की पुष्टि होती है। भारतीय कवियों के द्वारा रचित कविताएं समाज, जाति और प्रांतीयता की संकीण भावना मिटाते हैं। जनसामान्य के हृदय में कर्तव्य की भावना जगाते हैं। इन्हीं कवियों से प्रेरणा पाकर अनेक वीरों ने हंसते हंसते अपने देश को आजादी दिलाने के लिए अपनी जान को अर्पित कर दिया। वास्तव में हिंदी कवियों ने स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्र को जगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। भारतीय कवियों ने स्वाधीनता हेतु अपनी तलवार रूपी कलम को पैना किया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु बहुत प्रेरित किया। स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है जो कड़वाहट, दंभ, पीड़ा, आत्मसम्मान, गर्व, गौरव तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेटे हैं। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने-अपने तरीके से अपना योगदान, बलिदान दिए। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर सहयोग दिया। अंग्रेजों को भगाने में कलमकारों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई है। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों तक के अंदर कवियों ने अपने शब्दों से जोश भरे हैं।

द्विवेदी युग के कवियों ने स्वाधीनता संग्राम में अपनी कविताओं के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है मैथिलीशरण गुप्त, द्विवेदी, महावीर प्रसाद, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी तलवार रूपी कलम को उठाया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु बहुत उत्साहित किया। 'भारत- भारती' के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि कहलाए तो वही माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान व गर्व के भाव जगाए। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झांसी की रानी' आदि कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन में अपना योगदान दिया। इन कवियों ने कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका अदा की।राष्ट्रीय कवि मैथलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय रचनाओं के कारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी कवितायें अत्यंत लोकप्रिय रही। मैथलीशरण गुप्त ने भारतवासियों को स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को सुधारने की बात की- "हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी।

आओ विचारे मिलकर ये समस्याएं सभी।।"1

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में उन्होंने लिखा है कि - "जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर -पशु निरा है और मृतक समान है।।"2

मैथिलीशरण गुप्त के अलावा पंडित श्याम नारायण पाण्डेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए 'हल्दीघाटी' में लिखा। हल्दीघाटी के युद्ध में 'चेतक' तो घायल था फिर भी वह अपने स्वामी को लेकर दौड़ रहा था - "रणबीच चौकड़ी भर-भरकर चेतक बन गया निराला था।

राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था।
गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।"3

जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि' 'जय भारत देश' इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्ता हमारा तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' लिखा। इन सबके अलावा बंकिम चंद्र चटर्जी का देश प्रेम से ओत-प्रोत गीत 'वंदे मातरम' ने लोगों की रगों में उबाल ला दिया।

इन कवियों ने यह वीर रस वाली कविताएं सृजित कर रणबांकुरे में नई चेतना का संचार भरा। इसी श्रृंखला में रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह दिनकर, शिवमंगल सिंह 'सुमन', राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा 'शंकर', गया प्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अजेय आदि जैसे अगणित कवियों के साथ ही बंकिम चंद्र चटर्जी का देश प्रेम से ओतप्रोत वंदे मातरम गीत आजादी के परवानों को प्रेरित करता है। वंदे मातरम आज हमारा 'राष्ट्रीय गीत' है। जिसकी श्रद्धा भक्ति व स्वाभिमान की प्रेरणा से लाखों युवक हंसते-हंसते देश के खातिर फांसी के फंदे पर झूल गए।अब किसी भी कीमत पर देश के लोगों को पराधीनता स्वीकार नहीं थी। बंकिम चंद्र चटर्जी का देश प्रेम से ओतप्रोत गीत 'वंदे मातरम' ने लोगों के रगों में उबाल ला दिया।वन्देमातरम गीत ने हमारे सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरोकर सबके मन में ऐसा रोमांच उत्पन्न किया था कि अंग्रेज सरकार इस शब्द मात्र से ही काँपने लगी थी।जहाँ पर भी 'वंदेमातरम' की गूँज सुनाई देती थी वहीं अंग्रेज सरकार अनुमान लगा लेती थी कि यहाँ पर निश्चित ही क्रांति की आग दहक रही है - "वंदे मातरम्क !

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्यश्यामलां मातरम्! वंदे मातरम्!"4

वहीं हमारे राष्ट्रगान जन गण मन अधिनायक के रचयिता रविंद्र नाथ टैगोर का योगदान अदिति एवं अविस्मरणीय है।राष्ट्र प्रेम प्रेरक महिलाओं में सुभद्रा कुमारी चौहान जी का नाम बड़े ही सम्मान और आदर के साथ लिया जाता हैं।सुभद्राकुमारी चौहान नेस्वतंत्रता संग्राम में बहुत बढ़-चढ़कर भाग लिया था।सुभद्राकुमारी चौहान को क्रांतिकारी गीत लिखना बहुत पसंद था। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता को कौन भूल सकता है भला।जिसने अंग्रेजो की चूल्हे तक हिला कर रख दी। वीर सैनिकों में देश-प्रेम का आगाध संचार कर उनमें जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी बहुत प्रासंगिक है - "सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की, कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी की रानी थी।।"5

देश-प्रेम और देशभक्ति से ओत-प्रोत माखनलाल चतुर्वेदी की यह एक ऐसी रचना है जिसके जरिए उन्होंने आजादी की बलिवेदी पर शहीद हुए वीर सपूतों के प्रति अगाध श्रद्धा दिखलाई है। बलिदानों को सर्वोपरि बताया है।माखनलाल चतुर्वेदी ने एक फूल के माध्यम से अपनी बातों को जिस सशक्त व उत्कृष्टता के साथ कहा है वह बेहद ही सराहनीय है -" मुझें तोड़ लेना वनमाली!

उस पथ पर देना फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।।"6

जयशंकर प्रसाद की भी कलम बोल उठी - "हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।"7

देश पर मर मिटने वाले वीर शहीदों के कटे सिरों के बीच अपना सिर मिलाने की तीव्र चाहत लिए सोहनलाल द्विवेदी ने भी अपनी कविता के माध्यम से कहना चाहा - " हो जहां बली शशि अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।"8 इन सभी कवियों से आती है हमारे देश की खुशबू और हमें इन कवियों पर गर्व होता है। भारत के स्वतंत्रता के आंदोलन में भारतीय कवियों की ओजस्वी उद्गारों तथा उनसे मिली प्रेरणा ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसे कतई विस्मृत नहीं किया जा सकता हैं। स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान और उनकी लेखनी में प्रतिबिंबित के रूप में मजबूत राष्ट्रवादी स्वर शामिल है।

राष्ट्रीय कवि दिनकर की भांति 'चकोरी' जी अतित के गौरवपूर्ण पृष्ठों से देशवासियों को प्रेरणा लेने का संदेश देती हैं। 'चकोरी' जी ने अपनी रचनाओं में ध्वंसावशेषों या खंडहरों के माध्यम से अतीत के गौरव के साथ ही वर्तमान की दयनीय दशा का बोध कराया है।अतीत के रागरंग की स्मृति दिलाकर कवयित्री भारतवासियों के मन मे उत्साह भर देना चाहती है - " ठोकर खा, अपमानित हो सदियों से हो तुम सोते;

अपनी दिनावस्था पर क्या नहीं कभी को रोते?
लखो तो मेरी ओर;
मौन की तोड़ो डोर।
अरे, कहो वह कसक-कहानी, जो बरसती पीड़ा;
किस कठोरता ने उर-अंतर पर की हँस-हँस क्रीड़ा?"9

जब हमारा देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और उनसे मुक्ति पाने के लिए सभी देशवासियों, सभी कवि, लेखक, गीतकार, गजलकार आदि सब संघर्ष कर रहे थे।उस समय सारे कवि देशवासियों की भावना को और भी अधिक तीव्र कर करने का सराहनीय कार्य कर रहे थे। जब स्वतंत्रता आंदोलन की हमारे देश में धूम मची हुई थी तब हर प्रान्त हर भाषा-भाषी क्षेत्र के महान कवियों अपने-अपने ढंग से अपने-अपने क्षेत्र के लोगों का आजादी के आंदोलन में कूदने का आवाहन किया। ऐसा साहित्य लेखन थे जिसे पढ़कर या सुनकर हमारे देश के युवा पीढ़ी के रक्त में क्रांति का उबाल आ जाता था। इन कवियों ने भारतवासियों के मन, हृदय में सुधार व जागृति की उमंग उत्पन्न कर दी। स्वतंत्रता आंदोलन के इस महायज्ञ में कवियों ने तत्कालीन समाज में चेतना के ऐसे बीज बोये, जिनके अंकुरों की सुवास से सुवासित वृक्षों ने उस झंझावात को जन्म दिया।समाज के हर वर्ग को इस आंदोलन में ला खड़ा किया। सारे कवियों ने अपने लेखनी के माध्यम से हमारे समाज का आत्मविश्वास और मनोबल बनाये रखने का प्रशंसनीय कार्य किया। साहित्यिक कवियों ने भारतवासियों के हृदय में जागृति व सुधार की मांग उत्पन्न कर दी। स्वतंत्रता के इस आंदोलन में भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का नाम सबसे आगे है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने तत्कालीन युवा पीढ़ी के भीतर ऐसा उबाल पैदा किया था कि उनके साहित्य को पढ़कर हमारे देश के अधिकांश युवा अंग्रेजी सरकार के प्रतिशोध, अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे।

सन्दर्भ सूची -

1. भारत-भारती, संपादक-गणेश शंकर विद्यार्थी, मैथलीशरण गुप्त, बुंदेलखंड रिसर्च पोर्टल
2. भारत-भारतीय, संपादक- गणेश शंकर विद्यार्थी,कवि मैथलीशरण, गुप्त बुंदेलखंड रिसर्च पोर्टल
3. काव्य वाचन एवं विश्लेषण, हल्दीघाटी, द्वादस सर्ग,श्याम नारायण पाण्डेय पृ. संख्या - 449
4. राष्ट्रीय गीत, आनन्दमठ, बंकिम चंद्र चटोपाध्याय

5. स्वतंत्रता पुकारती, नंद किशोर नवल, सुभद्राकुमारी चौहान, साहित्य अकादमी, संस्करण 2006, पृ. संख्या - 198
6. काव्य सरिता, परिदृश्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2019, पृ. संख्या -36
7. कविता संग्रह, करुणालय, जयशंकर प्रसाद, नई दिल्ली, संस्करण 2020
8. पूजा गीत, सोहनलाल द्विवेदी, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद
9. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी कवियों का योगदान, पृ. संख्या -195